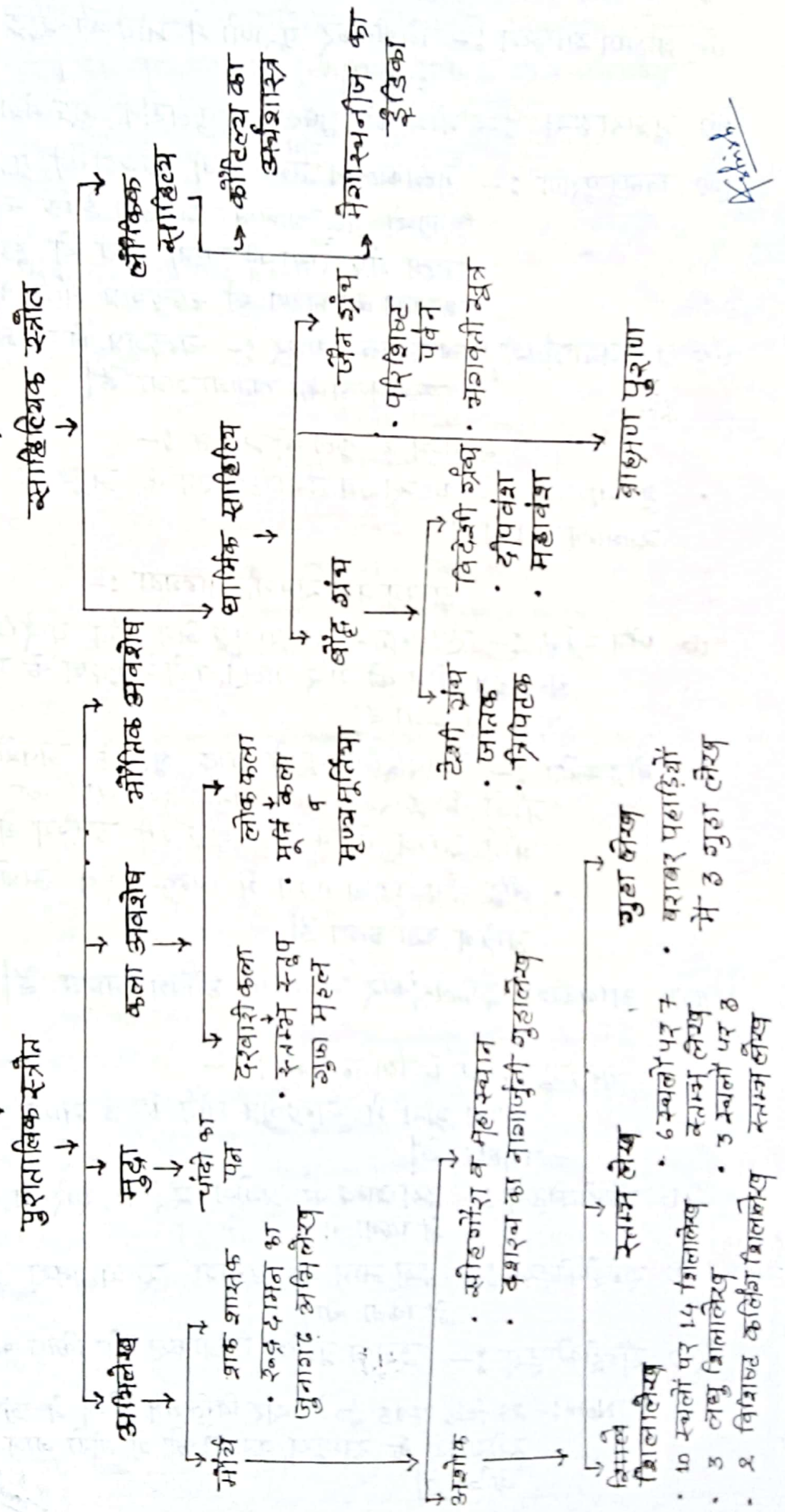


# मौखिक कालीन स्त्रोत

Ashish Kumar Thakur  
B.A.1, History, paper-1  
Dr. L.K.V.D. College, Tajpur  
L.N.M.U. Darbhanga, Samastipur



Kishish

\* मौर्य की उत्पत्ति (शुद्ध उत्पत्ति संबंधी मान्यता) :-

- (i) ब्राह्मण साहित्य :- विशीषकर पुराणों में मौर्य की शुद्ध वर्ण माना गया है।
- (ii) मुद्राराक्षस :- मौर्य की वृषल या कुलडीन शुद्ध वंश बताया गया।
- (iii) विष्णु पुराण :- मध्यकालीन तथा 10वीं शताब्दी की मुद्राराक्षस की टीका से यह आभास निकलता है कि चन्द्रगुप्त का जन्म नंद राजा की पत्नी मुरा से हुआ था। मुरा से उत्पन्न के कारण ही चन्द्रगुप्त मौर्य कहलाया।
- (iv) बृहत्कव्यामंजरी / क्वासरिय सागर :- चन्द्रगुप्त को निम्नकुल में उत्पन्न व्यक्ति बताया गया है।

सामान्य की कुल की मान्यता :-

- यूनानी साहित्यिक साक्ष्य तथा जस्टिन के अनुसार मौर्य वंश सामान्य कुल से थे।

द्वित्रिय वर्ण संबंधी मान्यता :-

- (i) जैन स्त्रोत :- हेमचंद्र रचित प्रसिद्ध जैन ग्रंथ परिशिष्टपर्वण में चन्द्रगुप्त मौर्य को मौर पालने वाले समुदाय के मुखिया का पुत्र कहा गया है।
- (ii) बौद्ध स्त्रोत :- महापरिनिर्वाण के बाद बुद्ध के अवशेषों की मौर्य मौर्यों के द्वारा किया जाना इस बात का द्योतक है कि मौर्य द्वित्रिय थे, क्योंकि बुद्ध भी द्वित्रिय थे।
  - बौद्ध ग्रंथ द्विव्यवादन में बिन्दुसार व अशोक को भी द्वित्रिय कहा गया है।
- (iii) अशोक की इतिहासकार मौर्यों को द्वित्रिय मानते हैं।

\* चन्द्रगुप्त मौर्य के विभिन्न नाम :-

- (i) यैण्ड्रीकोट्स :- यूनानी ग्रंथ में चन्द्रगुप्त मौर्य के 3 नामों का उल्लेख मिलता है।
- (ii) सैण्ट्रीकोट्स :- इस नाम का प्रयोग स्ट्रोबो, एरियान, एवं जस्टिन ने किया था।
- (iii) सैण्ट्रीकोट्स :- इसका प्रयोग निर्योक्त ने किया था।

Note :- 28 Feb, 1793 ई० में सर विलियम जोन्स ने शॉयल रुशियाई सोसाइटी के सम्मुख बताया कि ये तीनों नाम चन्द्रगुप्त मौर्य के ही हैं।

Arshid